

DPN 6819

धर्म संग्रह DHARMA SAMGRAHA

Title :

Run. No. 7544

Cat. No.

Micro. No.

Subject दार्शनिक Philosophy

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

लिखित नमूना नैपालमा ५
newa colophon text

Size in cms. 26 x 8

Folios 15

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator नागार्जुन

Scribe / donor

पूर्णकाजी तामाकार

Date: NS / SS / VS / KS 939

Ruler / place

Purna Kaji, Tamrakar

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमो भगवते ॥ इत्येतत्तमं नमस्कृत्य सर्वलोकहितोदयं कथ्यते मोहनाशाय धर्मस्य

समाप्ति वाक्य Colophon

श्रीश्री नागाजुन पादादिचित् ॥ अं धर्मं लब्धः समाप्तिरिति ॥ १

सन् १३९ मार्गशीर्ष शुद्ध द्वितीया सोमवार सिधमका शुद्ध शुभं ॥

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25



[illegible]

कंसमाफि ४ जी विरुं जाकिरु नास्ति निरु नित्य ना नाम काय पद काय व्यजन काय ॥ अति ॥ ॥ जी नमस्तु
 तानि ॥ गयथा ॥ आकाश प्रकि संखो नि बाध ॥ अयनि संका नि बाध ॥ अति ॥ ॥ षडिषया ॥ गयथा ॥ नूप
 भद्र गन्धु नमस्तु ॥ अर्ध मर् ॥ अति ॥ गय नूपं विषय स्वरा वं नी लं पी रं ना र्ति रं अ व द रं ॥ दी र्घं क स्व प नि म लु
 लं उ न्न रं भा रं वि भा रं अ र्धं धू मा न जा म ही का फा पा आ र प आ ला का अ र्ध का न ॥ अति ॥ ॥ अष्ट विध अष्ट
 गयथा ॥ सत्य पू नूष वा क्य ॥ सत्य पू नूष रु स्म दि भ द र ग य वं म ना हा व न्द ना स्म वि स ति ॥ ॥
 नमस्तु ॥ अति ॥ गयथा ॥ मधू न आ स्त ल व न क लु कि क क षाय ॥ अति ॥ ॥ यत्ना ना म न्द गु द र्ग न्द स म ग
 सं गंध

४. सं.

अविषमगन्धश्चकि॥ ॥ अकादशपर्सवानि॥ पृथ्वी आप कज वायु अग्न त्वं कर्क म त्वं लघु त्वं शुक्र त्वं मी
रजिष्वाभापिपाभाश्चकि॥ ॥ पक्कमहासूतानि॥ पृथ्वी आप कज वायु आकाशश्चकि॥ पक्कमोकि
कानि॥ नूपमदगन्धनसस्यर्भश्चकि॥ ॥ विंसक्तिमुन्यानां कथथा॥ अश्वात्ममुन्यानां वहिर्ह्युन्यानां ३
अश्वात्मवहिर्यमुन्यानां लक्ष्मणमुन्यानां जूलक्ष्मणमुन्यानां रावणमुन्यानां अश्वरावणमुन्यानां
पनराउन्यानां मुन्यानां मरुमुन्यानां पनमार्थमुन्यानां ससृकमुन्यानां असृकमुन्यानां अत्यक
मुन्यानां अनववायुमुन्यानां अनवकात्रमुन्यानां प्रकृतिमुन्यानां सर्वधर्ममुन्यानांश्चकि॥ ॥ दामभागपकि॥

समूह्याद॥ अविद्या सुक्ता न विज्ञानं नाम नूपं षडयकनं स्यर्भं वदना रुद्र उपादान रुद्रजा मिऊ नाम नव
आकपे निदवदृ४ खदोर्मनसा पायाभाश्चकि॥ ॥ सफेपिंस्वाधिपादिकाधर्मा॥ वत्वाविस्मरूप
स्तानानि॥ ४॥ वत्वाविस्मरूपस्तानानि॥ ५॥ वत्वाविस्मरूपस्तानानि॥ १२॥ पंचदश्यानि॥ १०॥
पक्कवदानी॥ २२॥ सफेवाश्चकि॥ २५॥ अर्थोष्ठांगकमार्गश्चकि॥ ३०॥ कश्चकमानिस्मरूप
पस्तानानि॥ कथथा॥ कायकामानस्मरूपस्तानानि॥ अवं वदना स्मरूपस्तानानि॥ विरुस्मरूपस्तानानि॥ धर्मस्म
रूपस्तानानि॥ कमानि वत्वाविस्मरूपस्तानानि॥ उत्पन्नानां कर्मलमूलानां संवर्तनं अनूत्येन्नानां समू

15

ध० सं०

त्याद॥ उत्पन्नानां समूह्या॥ उत्पन्नानां कृमलानां धर्मानां प्रहर्षा॥ अनृत्यन्नानां पूनवनृत्यादश्चि॥ ॥
 वत्तावमधिपादा॥ कथं॥ रुच्यमाधिप्रहर्षनायसत्कावसत्कानसमावापधकाअधिपादा॥ चवंचिरुअ
 धिपादा॥ कंथं॥ वीर्यमधिपाद॥ मीसारुअधिप्रहर्षनायसत्कावसमचागतमधिपाद॥ प॥ रुच्यया
 रुच्यभा॥ प॥ समाधिवीर्यसुमिप्ररुच्ययश्चि॥ ॥ सफवाध्वंमनि॥ सुमिसंवाध्वंमधर्मपनिचयः
 संवाध्वंम॥ वीर्यसंवाध्वंम॥ प्रीतिसंवाध्वंम॥ प्रभक्षिसंवाध्वंम॥ समाधिसंवाध्वंम॥ उपक्रासंवाध्वंमि
 कि॥ ॥ आर्षाष्टांगिकमार्ग॥ सम्यग्दृष्टिसम्यक्पक्वसम्यक्कमसि सम्यग्भजीवसम्यग्गोयामसम्य

४

10

5

कसुमिसम्यक्माधिश्चि॥ ॥ नृकसफप्रिभवाधिपाकि काधर्म॥ ० ॥ वरु॥ प्रकिसंविदश्च
 रुच्यभा॥ धर्मप्रकिसंविदुपूर्यप्रकिसंवर्गनिनूकिप्रकिसंवर्गप्रकितानप्रकिसंविदुश्चि॥ ॥
 वरुआध्वमध्व॥ आत्मध्वमधीगधध्वमधीधर्मध्वमधीमकुध्वमधीयकि॥ ॥ वत्ताविप्रकिसमसनि॥
 रुच्यभा॥ प्रुथप्रकिसमसतानवर्जनप्रकिमवधकाज्ञानप्रकिसमसतानविज्ञानप्रकिमवधकानीकार्थप्रकि
 भवधकाननमार्थप्रकिसमसतकाधर्मप्रकिमवधकानपूंगप्रकिसमसतकायकि॥ ॥ षडनूस्मरुय॥ वरु
 नूस्मकिधर्मानूस्मकिसंघानूस्मकित्यागनूस्मकिगीलानूस्मकिदवानूस्मकि॥ वकि॥ ॥ वत्ताविधर्म

५० सं०

जलीमुखीइवंगमाजुवलासाधुमनिधर्ममद्याथकि॥समकप्रतानिभूपमाहामवतीजयादमहमि॥ ॥पञ्चव
कमानुवकधर्मवकप्रहावकदिववकधर्मवकथकि॥षट्कभा॥नामप्रकिद्यंमनमयविद्याकृष्टिविविकि
साधकि॥ ॥पंचदष्टय॥सत्कानदष्टिअकृष्टरुष्टिमिथ्यादष्टिदष्टिप्रामर्षगीलप्रामर्षथकि॥ ॥वहुविमं ३
किभूपकंम॥कयथा॥काधउपानयकप्ररायम॥यामासूर्यस्थार्थमायामदविहिसाअस्मीअनपयपाहानंवरुमं
अअमंकोसियंप्रमादमुखिकमकिविक्रपअसंप्रकन्यकाकृष्टनिमिर्धविककंविवाथकि॥ ॥पंचाक्षना॥
आनाहानाकवलिकाहानाप्रयाहानास्यभाहानासंवकनिकाहानाथकि॥पञ्चरुयानि॥आजीविकारुयंअरुभकरु

यंमनमरुयंदुर्गकिरुयंवर्षदसावयरुयंवकि॥ ॥यत्नानिधानानि॥कयथा॥सविकर्कसविवायंविदकजंभीकिस्
खमिनि॥प्रथमंआनंअध्यात्मनाकभीकिस्खंविदुयकिदितीयंउयकास्मकिस्प्रकन्यसूखमितिहकियं॥उपकस्मकि
पविशुद्धिभद्र॥खासूखावदनकिवदुर्थआनमिनि॥ ॥अथाविभाका॥अनुयगाअनिकप्रमिहिकथकि॥ ॥
वाधिसत्त्वानांदभवलानि॥आयुवमिकाविहवमिकापनिस्त्वानवमिकाधर्मवमिकाअदिवमिकाऊनवमिकाअधि
मूक्तिवमिकाप्रमिधानेवमिकाकर्मवमिकाहानवमिकाथकि॥ ॥वाधिसत्त्वानांदभवलानि॥कयथा॥अधिमू
क्तिवलंप्रकिसंखानवले॥साववलंकाकिवलंहानवलेंप्रहामनवलेंसमाधिवलेंप्रकिलानवलेंप्रधवलेंप्रकिसं

15

ध. सं.

पहिले वलं विनि ॥ गथा गकस्य दभवलानि ॥ गयथा ॥ स्ताना स्तान संस्तान वलं कर्म विपाक स्तान वलं नाना धातु विस्त्रा
 न वलं नाना विमूक्तान वलं सुखं दीयप नाना स्तान वलं ॥ पूर्वनि वा सा सर्वशम मि न प्रमि पल्लि स्तान वलं धान विभाक
 समाधि समापलि संक्रम वा वदान यत्तान स्तान वलं ॥ पूर्वनि वा सा न स्तु कि स्तान वलं कल्प पलि स्तान वलं माय प्रकृत्य
 स्तान वलं शक्ति ॥ ॥ वत्तानि वेभान यानि ॥ गयथा ॥ अलिषु वा विवेभान यं प्राय व कृत्य स्तान वेभान यं प्रकृत्या वि
 कधर्म स्तान वेभान यं ने वीतिक मार्ग व क य वेभान यं शक्ति ॥ ॥ पञ्च मात्सर्या नि ॥ धर्म मात्सर्य लाह मात्सर्य प्रा
 वान मात्सर्य क भल मात्सर्य व नू मात्सर्य शक्ति ॥ अष्टादश वेतिका वृद्ध धर्मा ॥ गयथा ॥ नास्ति कथा गकस्य स्तुलि

10

5

तं नास्ति विहं नास्ति मुखि कस्तु किता नास्ति प्रस माहिक विहं नास्ति नाना त्व संहा ॥ नास्ति प्रमि संखा थाप क्ता ४ नास्ति
 वृथाप निहानि नास्ति वीर्यप निहानि ॥ नास्ति स्तु किप निहानि नास्ति समाधिप निहानि नास्ति प्रहाप निहानि ॥ ना
 स्ति विमूक्तिप निहानि नास्ति विमूक्तान दर्भप निहानि सर्वकार्य कर्म स्तान पूर्व कि म स्तानानूप निवृत्तिं सर्व क
 वा कर्म स्तान पूर्व ग म स्तानानूप निवृत्ति ॥ सर्व व मन क्क म स्तान पूर्व म म स्तानानूप निवृत्ति ४ ॥ अग्नी गंदू धन संग
 मय निरुक्त स्तान प्रत्यक्ष प्रबुध नि प्र संग म प्र निरुक्त स्तान दर्भ नं शक्ति ॥ ॥ वत्ताना म नाथ ॥ गयथा ॥ स्तु ध मा न क
 भ मा न द व प्र प्र मा न म स्तु मा न शक्ति ॥ ॥ वत्तानि प्रहा गानि ॥ गयथा ॥ प्रार्य स र्वां वि न लं क मा कर्म रु ल शक्ति ॥

15

ध. सं.

नवानपूर्वास्माद्विस्मापलि॥ कथथा॥ वत्ताविष्मनानिब्रुमसमपलुय॥ निब्रुमसमापलुय॥ ॥ कथिं
 भलकृष्णनि॥ कथथा॥ वत्ताविष्मनानिब्रुमसमपलुय॥ निब्रुमसमापलुय॥ ॥ कथिं
 पदकलगासुदृक्कल्लरुक्कपादकलगासुक्कदगादीर्घाणुलिगा॥ आयनयानिच्छिका॥ मयूगमजगाडसंगपादगाः
 उक्तीगमासमा॥ नयकं यगापट्नुवाहगा॥ काषमकवच्छिगुह्यासुवर्णवर्णगा॥ सुक्कविगापदक्किमवर्णकमास
 गा॥ उक्तीकिसुखगासिंहपूर्वाककायनामसंरुक्कसंवेगां॥ विक्काकनांगगावसमसायगा॥ नयधपविमलुलगा
 ॥ उक्तीगीनगापलुक्ककिरुनगा॥ वत्ताविष्मनानिब्रुमसमपलुय॥ निब्रुमसमापलुय॥ ॥ कथिं

८

10

5

गा॥ समवत्ताविष्मनानिब्रुमसमपलुय॥ निब्रुमसमापलुय॥ ॥ कथिं
 लिम्बनखगा॥ उगनखगा॥ सुगं॥ लिगा॥ अनपूर्वा॥ लिगा॥ उठमिलगानियस्त्रिभिबगा॥ उठगुठगा॥ अविषमपाद
 गा॥ सिंहविकारुक्कगमिगा॥ नागविकारुक्कगमिगा॥ सुविकारुक्कगमिगा॥ वषरुविकारुक्कगमिगा॥ प्रदक्किमग
 गमिगा॥ वानूगमिगा॥ अवकगमिगा॥ वरुगमजगा॥ मुषूगमजगा॥ अनपूर्वगमजगा॥ विगमजगा॥ मुदगमजगा॥ वि
 सुक्कगमजगा॥ पविपूर्वव्यंजनगा॥ पृथ्वानूमलुलगा॥ यगा॥ समकमगा॥ विषुखनजगा॥ सुक्कमावगा॥ अदीनगा
 उगा॥ उल्लाहगा॥ यगा॥ गलीवक्ककिगा॥ यमनगा॥ यगा॥ सुविनकां॥ कपसंगगा॥ विविमिबगा॥ लाकगा॥ वडंगकि

15

10

व.सं.

गामृष्टदृक्क्रिगाजूरयकृक्रिगाजूरगकृक्रिगागमृनारिगाप्रदक्रिगावरुनारिगासमकपाभदिकगाभु
 विसमृदावावगावपगगर्गेलकावगभजगाभूवसदृससूकमानपाणिगालिग्वानिलखिगागंरीवपाविलख
 गाभूयगापाविलषतानात्यायगवचनगाविवप्रतिविधाष्टतामृदृक्रिगागनूक्रिगावकृक्रिगाभयगजि २
 गंधाषतामधूनवान्मंशस्त्रवगावरुंष्टगागीर्षदृष्टताभुकदंष्टगासमदंष्टगाभूनर्षवृष्टगाभुंगनाभगा
 भुभिनाभगाविभाननयनगाविरुपगासीगासीककमलदर्भननयनगाभूयगकृकगाभुककृकगासूस्त्रिथ
 कृगापीनाभगकृकगासमकर्तृगासमकर्तृगाभूनपरुतकर्तृडियगाभूपनिस्वानललाटगापृथुलेलाट

5

गासूपविपूःसंगगाभमवभदभकभगाविशकभगाभूषकभगाभूसलूठिकभगाभूपलूठिकभगासूवकि
 कभगापीवसस्त्रिकनद्यवरुकलितपाविपादकलगायति॥ ॥वकवेकीनांसफनलानि॥कयथावकनसं
 भूयवन्नरुकिवलंमसिबलंकीवलंखेन्नलंपत्रिभायकवलंयति॥ ॥कउयभूध॥भूकिगाइध॥भूनाग
 गाधप्रसूयनाभूधवति॥ ॥चत्वावकंन्या॥भूनरुकंन्यामहाकंन्या ॥कन्या यति॥ ॥
 वत्वावायू॥ककनगायाप्रकलियुगवति॥ ॥शोकदय॥सत्त्वलाकहाजनलाक॥यति॥ ॥वडुयानि॥
 भूउज॥सत्त्वकजजनायूउपपाइक॥यति॥ ॥पक्ककपाया॥कभकपायदृष्टिकपायसत्त्वकपायभूयूकपाय

15

ध.सं.

कल्पकषायवर्गि॥ ॥गजसत्त्वाध्या॥गजयथा॥ककमापूर्वोक्तकाटिपत्रिहारायाअपनाककाटिपत्रिहारायवृद्ध
मनिकाटिपत्रिहारायवर्गि॥ ॥दुःखहानानि॥गजयथा॥दुःखहानंनसमथसमूदयहानंनिवाधमार्गधर्मजर्थ
सर्वरूपवर्णकय॥अनत्यादहानंवि॥ ॥पक्षहानानि॥आदर्भनंसमताप्रत्यवप्रक्षकल्यानसुखनं॥ १०
विशुद्धधर्मध्याहानंवि॥ ॥धसत्य॥गजयथा॥सर्वरूपसंपन्नमार्थसत्यंवि॥ ॥वृद्धनार्यसत्यवाडन
हानंक्रांति॥॥दुःखधर्महानक्रांतिदुःखधर्महानादुःखप्रदयक्रांतिदुःखद्वयहानंसमूदयहानक्रांति
समूदयधर्महानंसमूदयधर्महानंसमूदयद्वयहानंक्रांतिदुःखद्वयहानंसमूदयधर्महानक्रांतिमार्ग

10

5

निवाधधर्महानंनिवाधद्वयहानक्रांति॥निवाधद्वयहानंमार्गधर्महानक्रांतिमार्गधर्महानंमार्गद्वयहानक्रां
क्रि॥मार्गद्वयहानक्रांति॥ ॥ककुदुःखसत्यवत्त्वान्नआकाव॥अनित्यवदुःखेभूयत॥समात्मत॥अ
क्रि॥ ॥वत्त्वान्नआकावानि॥दुःखवत॥समूदयत॥प्रवत॥प्रत्ययत॥अक्रि॥ ॥निवाधसत्यवत्त्वान्नआ
कावा॥निवाधत॥अक्रि॥प्रतीकत॥सन्ननंनंवि॥ ॥मार्गसत्यवत्त्वान्नआकावा॥मार्गत॥व्यायत॥प्रतिपेदिक
॥नेर्मानिक॥अक्रि॥ ॥वत्त्वान्नसमाधय॥आलाकव॥लाकनकोदभप्रतिष्ठानकर्त्यसमाधि॥अक्रि
गजाष्टोमंरूपंपुंगवार्थ॥गजयथा॥अक्रि॥अपन्नरुलंप्रतिपन्नक॥अक्रि॥अपन्नसकदागामिरुलंप्रतिप

धसं

चकसकदागमिषाप्रनागमिरुलं प्रणिपन्नक॥ अनागमि॥ अहंकरुलप्रणिपन्नक॥ अहंकरुलप्रणि॥ ॥
कथाप्रणिपूगलागकथथायज्ञानभवीधर्मानभालोक्षतापन्नदवंरुलना॥ मनुष्यागवंगन॥ सकदा
गमिरुलं॥ यज्ञाविमूकि॥ दृष्टिपाप॥ कवानिक॥ अनागममीअकनायंपनिनिर्वापीउपपत्यपनिनिर्वा ११
पी॥ प्रक॥ अहयप्रक॥ सर्वास्तुनलक॥ दृष्टधर्मसम॥ कायसाहीखन्द॥ अकि॥ ॥ कदनदादभकावधर्म
वक्रप्रवर्क॥ ककमक॥ ॥ दं॥ दृ॥ खआर्यसत्यमिहिरिहिकव॥ पूर्वमनुअनकषधर्मपूयानिधामनिसिग
कवक॥ वक्रनृदपादिहानमत्यादिविह्यादि॥ वृद्धिन्यादि॥ ॥ दं॥ दृ॥ खमावर्मसत्यं

उखल्वरिह्यपनिहानमिहिरिहिकव॥ पूर्वमनुअनकषयानिसामनसिर्जक॥ ॥ ॥ किदिगीय॥
॥ दं॥ आर्यसत्यं॥ उखल्वरिहानं॥ किहिरिहिकव॥ त्यादिपूर्ववदितिय॥ ॥ दं॥ दृ॥ खसमूदयं
मार्यसत्यं॥ नखल्वरिह्यायं॥ प्रहीमिहिलीत्यादिवकीयं॥ कथथा॥ दं॥ दृ॥ खनिनाधआर्यसत्यमिहिरि
प्रथक॥ दं॥ दृ॥ खनिनाधआर्यसत्यं॥ नखल्वरिह्यायं॥ स्याकककवमिहिलीत्यादिदिगीय॥ दं॥ दृ॥
खनिनाधआर्यसत्यं॥ नखल्वरिह्यायं॥ साकककमिहिलीगीय॥ कथा॥ दं॥ दृ॥ खमार्गममिनिप्रणिपदायस
त्यमिहिरिप्रथक॥ दं॥ दृ॥ खमाकगमिनीप्रणिपत्॥ ॥ दं॥ आर्यसत्यं॥ ॥ नखल्वरिह्यावसावयिकव्यामि

ध. सं. कि॥ ॥ गजवत्त्वा नादी पा४॥ गयथा ॥ पूर्वविद रुक्मचूदी पा अपन रगादाय नीड रुक्मचूदी पा ॥ ॥ अष्टोऽं
 छननका ॥ सजीवननका सुप्रसंघा रुक्मलव महा नानवरु पन प्रक पन प्रवी विव कि॥ ॥ अष्टोभीरु मनका ४॥
 पूर्वद ४॥ निवृद ४॥ अष्ट अपसा हा हा धन उत्पन्ना पमू सो गधिक पंद नी नम हा पम ॥ ॥ सफ पा का लानि ॥ १३
 गयथा ॥ धनभीरु ल ४॥ अष्ट ल आप कां वन संजीवननका ॥ ॥ अष्टोभीरु ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु
 ॥ ॥ अष्टोभीरु पर्वता ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु
 सफ सा गना ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु

जकायिका शयस्त्रिंशु विनायामानिर्मानम कि॥ पन निमिंत व भव किन ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा
 ॥ गयथा ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा
 ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा
 ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा
 ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा ॥ ॥ अष्टोभीरु म हा य क वा

४. सं.

सूयनवदनीयं वनि॥ ॥ विविधं पाकिर्या॥ नयथा॥ सन्निपाकिर्या आदमनापाकिर्या अनू मनीपाकिः
हार्पा॥ ॥ अस्त्रवक्रा॥ नवकापपरि॥ किर्पुपपरि॥ समलाकापपरि॥ पृथक्जनपदापपरि॥ दीर्घा
युग्मदवापपरि॥ ॥ द्विपविकसिता मिथ्याद्विष्टि विहत्यादविनासिता॥ ॥ विविधविकल्पा॥ नयथा॥ अनू १४
स्मवसविकल्पा॥ सुतीलसविकल्पा॥ सुदूर्जविकल्पा॥ ॥ वत्सवस्समाधय॥ नयथा॥ द्वंगम॥ गगमगं
ज॥ विमलप्ररु॥ सिंरुविक्रिडित॥ ॥ वडुर्दभवाकृकवमुनि॥ नयथा॥ आस्त्रगलाक॥ अस्त्रगलाक॥ आ
स्त्रगलाक॥ नवभस्त्रग॥ अस्त्रवानलाक॥ अनकवानलाक॥ अनकश्चानकलाक॥ नेवाकवावाकवधरुव

गिराकथागत॥ पमंमवधकृनरुवकि॥ कथागतपममवधरुवकि॥ कथागतपमंमवधकृ॥ नेवरुवंकिनरुवकि॥
रुथागत॥ पमंमवधकृ॥ संजीव॥ कथविनसपूयाजीवाश्चस्त्रीन॥ ॥ विविधमूलानि॥ नयथा॥
पूषपूलारुपूलारु॥ ॥ अरुदिपर्यायाकशीलीपूकूलमूलानि॥ नयथा॥ ॥ सारुमारुखषा॥ ॥
निभमिका॥ अदिविर्हमिषा॥ अदिमीलमिषा॥ अदिप्ररुमिका॥ ॥ ११४॥ पक्किर्निवय॥ सार्धनसम्यस
मिका॥ कमकुचनवापादनस्तनमिधनडककोकथनविविकिसया॥ ॥ ॥ ॥ किथीनागभरुनपादाविनवि
क॥ यांधर्मसंगरु॥ समाफमिति॥ ॥ सचरु॥ ३२॥ मार्गमिलमुदिदिकियाभामवानसिधयकाशुलमुहं॥

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

ध.सं.

२५